

प्रथम दिवस आवरण
FIRST DAY COVER



स्वामी विवेकानन्द की 150 वीं जयन्ती 150th BIRTH ANNIVERSARY OF SWAMI VIVEKANANDA

150th Birth Anniversary of Swami Vivekananda

Swami Vivekananda (1863-1902), one of the tallest spiritual leaders of modern India, strove to promote peace, well-being and brotherhood among all humanity.

Born as Narendra Nath Datta, his intellectual brilliance was evident right from childhood. He excelled in music, gymnastics and studies. Narendra, at the threshold of youth, was given to spiritual enquiries, and this led him to the well-known mystic Sri Ramakrishna of Dakshineswar. A unique teacher-disciple relationship developed between them and, under the guidance of the master, Narendra made rapid strides along the spiritual path.

Distress visited young Narendra to test him. The sudden death of his father in 1884 left the family penniless, followed by the illness of Sri Ramakrishna which was diagnosed to be cancer of the throat. He faced the challenges stoically and courageously and led a group of young disciples in nursing the Master with devoted care. Sri Ramakrishna passed away in 1886. After the Master's passing, fifteen of his young disciples formed a new monastic brotherhood under the leadership of Narendra. Subsequently, Narendra assumed the name Swami Vivekananda.

In the middle of 1890, after considerable thought, Swami Vivekananda left his math and embarked on a long journey of exploration of India, with the objective of taking the message of Sri Ramakrishna, whom he considered the prophet of the present age, far and wide. During his travels around India, Swami Vivekananda was deeply moved to see the appalling poverty and backwardness of the common people. He understood that the root cause of poverty was that the downtrodden masses, owing to centuries of oppression, had lost faith in their capacity to improve their lot. The urgent requirement was to infuse faith in themselves into their minds. For this, they needed an inspiring and a life-giving message. Swamiji found this message in the principle of the atman, the doctrine of the potential divinity of the soul, taught in Vedanta. The common folk needed to be taught how to apply the ennobling principles of Vedanta in practical life. The medium to spread this knowledge had to be education, and an efficient organization of dedicated people was needed to accomplish this.

In the course of his wanderings Swami Vivekananda heard about the World's Parliament of Religions to be held in

Chicago in 1893. He felt that it would provide the right forum to present Sri Ramakrishna's message to the world, and decided to participate. His speeches at the Parliament of Religions held in September 1893 made him famous as 'Messenger of Indian wisdom to the Western world'. After the Parliament, Swamiji spent nearly three and a half years spreading Vedanta as lived and taught by Sri Ramakrishna, in the USA and England.

After his return to India in 1897, he delivered a series of inspiring lectures in different places which attempted to create pride in our cultural heritage and roused the spiritual and religious consciousness of the people. The objective of the lectures was also to focus the attention of educated people on the plight of the downtrodden masses, and to expound his plan for their upliftment by the application of the principles of practical Vedanta.

Swami Vivekananda founded the Ramakrishna Mission in May 1897, a unique organization in which monks and lay people jointly undertake propagation of practical Vedanta. The activities include various forms of social service, such as running hospitals, schools and rural development centres, and conducting relief and rehabilitation work for victims of earthquakes, cyclones and other calamities, in different parts of India and other countries. In 1898, Swamiji set up a permanent abode for the monastery and monastic Order at Belur on the western bank of Ganga. Here Swamiji adapted ancient monastic ideals to the conditions of modern life, giving equal importance to personal illumination and social service.

A second journey to the West in 1899 and the many lectures delivered there led to Swamiji's stature as a leading spiritual guide of the modern times being re-inforced. Incessant work, especially giving lectures and interacting with thousands of people, told upon Swamiji's health. His health deteriorated and the end came quietly on the night of 4th July, 1902 at the Belur math.

The Department of Posts is privileged to issue a set of four Commemorative Postage Stamps and a sheetlet depicting various milestones of the life of Swami Vivekananda to commemorate his 150th anniversary.

Credits:-

Text	: P.N.Ranjit Kumar (Based on material furnished by the proponent)
Stamp/FDC	: Sankha Samanta
Cancellation	: Nenu Gupta



भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India



स्वामी विवेकानन्द की 150 वीं जयन्ती
150th BIRTH ANNIVERSARY OF SWAMI VIVEKANANDA



विवरणिका BROCHURE

स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जयन्ती



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख	: 12 जनवरी, 2013
Date of Issue	: 12 January, 2013
मूल्यवर्ग	: 2000 पै. / 500पै. / 500पै. / 500पै.
Denomination	: 2000 p./500p./500p./500p.
मुद्रित डाक-टिकटों	: 2.1 लाख प्रत्येक
Stamps Printed	: 0.21 Million Each
शीटलेट	: 1.1 लाख
Sheetlet	: 0.11 Million
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure reserved with the Department.

में हुई विश्व धर्म संसद में स्वामी विवेकानन्द के भाषणों ने उन्हें पश्चिमी दुनिया में भारतीय ज्ञान के संदेशवाहक के रूप में प्रसिद्ध किया। धर्म संसद के बाद स्वामी जी ने संयुक्त राज्य अमेरिका और इंग्लैंड में लगभग साढ़े तीन वर्ष व्यतीत कर श्री रामकृष्ण की शिक्षा और उनके उदाहरण के अनुसार वेदांत का प्रचार-प्रसार किया।

1897 में भारत लौटने के उपरांत उन्होंने विभिन्न स्थानों पर प्रेरक व्याख्यान दिए, जिनका उद्देश्य हमारी सांस्कृतिक विरासत को लेकर गर्व की भावना उत्पन्न करना था। इन व्याख्यानों ने जनसाधारण की आध्यात्मिक और धार्मिक चेतना को जागृत करने का कार्य किया। इन व्याख्यानों का उद्देश्य शिक्षित लोगों का ध्यान दबे-कुचले आमजन की दुर्दशा की ओर आकृष्ट करना और व्यावहारिक वेदांत के सिद्धांतों के कार्यान्वयन के माध्यम से उनके उत्थान की योजना को प्रचारित करना था।

स्वामी विवेकानन्द ने मई 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। यह ऐसा अनूठा संगठन है, जिसमें मठवासी और आम जनता साथ मिलकर व्यावहारिक वेदांत का प्रचार-प्रसार करते हैं। इनके कार्यकलापों में विभिन्न प्रकार की समाज-सेवा शामिल है, जैसे अस्पताल, स्कूल तथा ग्रामीण विकास केन्द्रों का संचालन तथा भारत तथा अन्य देशों के अलग-अलग हिस्सों में भूकंप, समुद्री तूफानों तथा अन्य आपदाओं के पीड़ितों के लिए राहत और पुनर्वास कार्यक्रम आयोजित करना। 1898 में स्वामी जी ने गंगा के पश्चिमी तट पर बेलूर में सन्यासियों के लिए स्थायी मठ की स्थापना की। यहां स्वामी जी ने प्राचीन सन्यासी-जीवन से जुड़े प्राचीन सिद्धांतों को आधुनिकजीवन-शैली की परिस्थितियों के अनुसार ढाला, जिसमें उन्होंने व्यक्तिगत ज्ञानोदीप्ति के साथ-साथ समाज सेवा को भी बराबर का महत्व प्रदान किया।

1899 में स्वामी विवेकानन्द एक बार फिर पश्चिम की यात्रा पर गए और यहां उन्होंने अनेक व्याख्यान दिए। इन व्याख्यानों ने आधुनिक समय के अग्रणी आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में उनकी प्रतिष्ठा को एक बार फिर सुस्थापित किया। अथक कार्य, विशेषकर व्याख्यान देने और हजारों लोगों से संपर्क करने के परिणामस्वरूप स्वामी जी के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। उनकी सेहत बिगड़ने लगी और 4 जुलाई, 1902 को रात्रिकाल में बेलूर मठ में उनका निधन हो गया।

डाक विभाग, स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में उनके जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धियों पर चार स्मारक डाक-टिकटों का सेट और एक शीटलेट जारी करते हुए गौरव का अनुभव करता है।

आमार :-

मूलपाठ	: पी.एन. रंजीत कुमार(प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित)
डाक-टिकट / प्रथम दिवस आवरण	: शंख सामंत
विरूपण	: नीनू गुप्ता

मूल्य ₹ 2.00

स्वामी विवेकानन्द(1863-1902) आधुनिक भारत के महानतम आध्यात्मिक महापुरुषों में से एक थे। वे संपूर्ण मानव जाति में शांति, कल्याण और भाईचारे की भावना को प्रोत्साहित करने के लिए प्रयासरत रहे।

उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। बचपन से ही उनकी बौद्धिक प्रखरता के प्रमाण मिलने लगे थे। उन्होंने संगीत, जिम्नास्टिक्स और पढ़ाई में उत्कृष्टता प्रदर्शित की। युवावस्था की दहलीज पर कदम रखते-रखते उन्हें आध्यात्मिक खोज की लौ लग गई और इसी मार्ग पर चलते हुए वे दक्षिणेश्वर के सुप्रसिद्ध रहस्यवादी श्री रामकृष्ण तक पहुंच गए। इन दोनों के बीच गुरु-शिष्य का अनूठा संबंध बन गया। गुरु, श्री रामकृष्ण के मार्गदर्शन में नरेन्द्र आध्यात्मिक पथ पर तेजी से अग्रसर होने लगे।

युवावस्था में नरेन्द्र की परीक्षा लेने उन पर विपदाएं आ पड़ीं। 1884 में उनके पिता की अचानक हुई मृत्यु के कारण उनका परिवार निर्धनता में आ गया। इसके बाद श्री रामकृष्ण बीमार हो गए और पता चला कि वे गले के कैंसर से पीड़ित थे। उन्होंने सभी चुनौतियों का सामना दृढ़-विश्वास और साहस के साथ किया। वे युवा अनुयायियों के समूह के साथ गुरु श्री रामकृष्ण की सेवा में समर्पित हो गए। 1886 में श्री रामकृष्ण का निधन हो गया। श्री रामकृष्ण के देहावसान के बाद नरेन्द्र के नेतृत्व में उनके 15 युवा अनुयायियों ने एक नया मठ बनाया। तत्पश्चात् नरेन्द्र को स्वामी विवेकानंद के रूप में पहचान मिली।

1890 के मध्य में भली-भांति सोच-विचार कर स्वामी विवेकानन्द ने अपना मठ छोड़ा और भारत की खोज की लंबी यात्रा पर निकल पड़े। उनका उद्देश्य श्री रामकृष्ण, जिन्हें वे मौजूदा दौर का पैगंबर मानते थे, के संदेश का दूर-दूर तक प्रचार-प्रसार करना था। अपनी भारत यात्रा के दौरान स्वामी विवेकानन्द जनसाधारण की घोर निर्धनता और पिछड़ेपन से गहरे प्रभावित हुए। वे समझ गए कि गरीबी का मूल कारण यह था कि सदियों के दमन के कारण दबी-कुचली जनता का खुद पर विश्वास टूट चुका था कि वे कभी अपनी दशा में सुधार भी कर सकते हैं। सबसे अधिक जरूरत इस बात की थी कि लोगों का आत्मविश्वास लौटाया जाए। इसके लिए एक प्रेरक और जीवनदायी संदेश की आवश्यकता थी। स्वामीजी को यह संदेश वेदांत के अंतर्गत आत्मा के सिद्धांत में प्राप्त हुआ, जिसके अनुसार आत्मा दैविक क्षमता से युक्त है, और जिसकी शिक्षा वेदांत में प्रदान की जाती है। जनसाधारण को केवल यह शिक्षा प्रदान की जानी थी कि वेदांत के सिद्धांतों को व्यावहारिक जीवन में कैसे लागू किया जाए। इस संदेश के प्रतिपादन का माध्यम शिक्षा थी और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समर्पित लोगों के कुशल संगठन की आवश्यकता थी।

अपनी यात्राओं के दौरान स्वामी विवेकानन्द को 1893 में शिकागो में होने वाली विश्व धर्म संसद की जानकारी प्राप्त हुई। उन्हें लगा कि यह संसद श्री रामकृष्ण के संदेश को समस्त विश्व तक पहुंचाने का उपयुक्त मंच प्रदान करेगी। उन्होंने इस संसद में भाग लेने का निर्णय लिया। सितंबर 1893